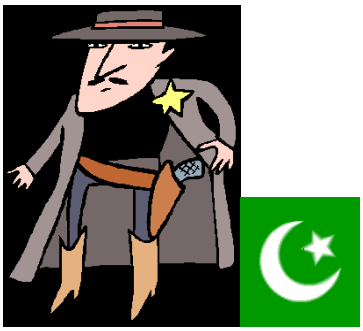

बुश का प्यारा मुशर्रफ

भाई लोगो, देखिये प्लीज, बुरा मत मानइयेगा, मुझको नालायक खुराफाती लौंडे बहुत पसंद हैं । जो बच्चा बहुत शैतानी करता है मुझको बड़ा अच्छा लगता है । एक्टिव है पठ्ठा, जरूर नाम कमायेगा, चाहे डकैती में ही सही ।

कारगिल युद्ध के दौरान दुनिया मुशर्रफ को उतना नहीं जान पायी था हलांकि सारा खेल इसी पठ्ठे का खेला हुआ था । नवाज शरीफ का बड़ी ही शराफत से तख्ता पलटा दिया । नॉटी बॉय ।

मित्रों, आप चाहे माने न माने, या आप यह भी कह सकते हैं कि मैं मुशर्रफ पुत्तर का पक्ष ले रहा हूँ पर मुशर्रफ बहुत ही रहमदिल बेटा है । अब आप ही बताइये नवाज शरीफ मुशर्रफ का प्लेन उतरने ही नहीं दे रहे थे । वे चाह रहे थे कि मुशर्रफ बिना लैंड किये ही दुनिया से टेक ऑफ कर जायें । हत्या की कोशिश । पर मुशर्रफ ने फांसी के रिवाज को छोड़ कर शरीफ को पाकिस्तान से तड़ीपार कर दिया । अब शरीफ मियां अरब में बैठ कर टेसू बहा रहे हैं ।

अब आगे कि करतूत देखिये । पाकिस्तान में प्रजातंत्र दाल में नमक की तरह यूज किया जाता है । लेकिन बेनजीर और शरीफ प्रजातंत्र की हैसियत नकम से उठा कर चटनी, अचार करना चाहते थे । पाकिस्तानियों को ब्लडप्रेशर की शिकायत हो रही थी । मुशर्रफ छोरा फौज में है जी, उससे अपने देश वासियों का हाजमा बिगड़ते नहीं देखा गया । तड़ से उसने फौजी शासन का इंजेक्शन लगा दिया । पाकिस्तान की हेल्थ अब सुधर रही है । प्रजातंत्र जैसी फालतू चीज भारत, अमेरिका के लिये हैं । पाक अधिकृत कश्मीर पाकिस्तान की असली तस्वीर है । जहां सन 47 से नागरिकों को भेड़ बकरियों समझ कर आतंकवादियों का शासन चलाया जा रहा है । प्रजातंत्र मुशर्रफ लल्ला के लिये जूता चमकाने की पॉलिश की तरह है जिससे वह अपने फौजी जूते चमका कर

अमेरिका को यह बताता है कि प्रजातंत्र हम भी यूज करते हैं पर इस तरह से । क्या करें ! आदत है !

मुशर्रफ गुरू का फैन में आगरा वार्ता के बाद से हुआ । कुछ बुद्धू भारत और पाकिस्तान में ऐसे हैं जो दोनें देशों में मित्रता और शांति चाहते हैं । मुशर्रफ सयाना उनका दिल नहीं दुखाता । कुछ हफ्तों के लिये तुम भी खुश हो लो । आगरा शिखर वार्ता हुयी । अटकलें लगीं । लगा सारी शत्रुता यमुना में बहा दी जायेगी । पर अचानक मुशर्रफ बाजीगर हो गया और हमारे देश में हमीं को उल्लू बना कर चला गया । गधे हैं हम जो ऐसे दुश्मन को लजीज पकवान खिलाते हैं और ताजमहल दिखाते हैं । इतिहास सिर्फ रटा जाता है यहां उससे सीखा कभी नहीं गया ।

अब आया अफगानिस्तान का मामला । पूरा पाकिस्तान खिलाफ कि क्यों अमेरिका की मदद की जा रही है । मैं तो समझता था कि मुशर्रफ मियां के सितंबर में ही वारे न्यारे हो जायेंगे पर उसने ऐसा बेवकूफ बनाया कट्टरपंथियों को कि वह विरोध नहीं हो पाया जिसकी कल्पना की गई थी । मुशर्रफ के पास एक ऐसी एंटीबायटिक गोली है जिससे वह अपने सारे मर्ज दूर कर लेता है । वह गोली है कश्मीर । संजीवनी बूटी है भारत । अगर कराची की किसी गली में किसी जमादार को भी गोली मार दी गयी तो यह काम भारत के सिवाये और कौन कर सकता है ।

ऐसा राजनितिज्ञ मैंने न पढ़ा, न सुना, न देखा । अमेरिका को हवाई अड्डे दे रहा है । तो दूसरी तरफ तालिबानों को हथियार दे रहा है । दोनो खुश । अमेरिका बदले में डालर दे रहा है और तालिबान दोस्त समझ रहा है । ग्रेट । इतना बड़ा गेम तो सिकंदर, नेपोलियन और हिटलर भी नहीं खेल सकते थे । हाय! मुशर्रफ को कहीं मेरी नजर न लग जाये ।